Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 3; 2024; Page No. 117-120

Received: 02-02-2024
Accepted: 08-03-2024

उत्तर प्रदेश के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' का अध्ययन

[1]गीता पाण्डेय, [2]डॉ. प्रवीन त्रिपाठी

[1]शोधकर्ता, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: गीता पाण्डेय

सारांश
शिक्षा एवं मूल्यों का प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। शिक्षा में असमानता होना मूल्यों में असमानता का प्रमुख आधार है। सुकरात का मानना है कि शिक्षा स्वयं में नैतिक है और ज्ञात अपने आप में सदविचार। मूल्यों को सीखा नहीं जा सकता अपितु उन्हें आत्मसात किया जाता है। चिन्तन एवं अनुभवों के आधार पर जे० कृष्णमूर्ति ने मूल्यों की गहन व्याख्या की है। उनका मानना है कि मूल्यों को पहचानना व उनको आत्मसात करना व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है। विवेक से ही व्यक्ति अच्छे–बुरे का भेद कर अच्छे गुणों का चयन करता है। किसी व्यक्ति के विवेक को कोई भी शिक्षक गुरू, संत एवं शिक्षण प्रणाली उजागर नहीं कर सकती और न ही किसी अन्य व्यक्ति को दिया जा सकता है। मूल्य एवं विवेक व्यक्ति की अर्न्तनिहित क्षमताएँ हैं जिनमें अन्तर करना कठिन कार्य है। सरस्वती के वाहन हंस को विवेकशील माना जाता है उसमें दूध एवं पानी को अलग करने की क्षमता होती है। इसी प्रकार व्यक्ति विवेक द्वारा सदगुणों का चयन कर उन्हें आत्मसात करता है। मूल्यों को मन में बैठाने के सन्दर्भ में विवेक तत्व, आलोचनात्मक विश्लेषण एवं चिन्तन सदगुणों के चयन की प्रवृत्ति तथा भावपूर्ण क्रिया से अभिव्यक्ति होती है।

मुख्य शब्द: विद्यार्थियों, शिक्षा, असमानता, सरस्वती, सहारनपुर, इतिहास

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास में जब से मानव सभ्यता का उदय हुआ है तभी से भारत अपनी शिक्षा, दर्शन तथा मानवीय मूल्यों के लिए प्रसिद्ध रहा है। हमारी संस्कृति अपने विभिन्न मूल्यों के कारण ही विश्व प्रसिद्ध है। शिक्षा मानव जीवन का आधार है। मानव का विकास एवं उन्नयन शिक्षा पर ही आधारित है शिक्षा के द्वारा ही मानवीय एवं नैतिक मूल्यों का विकास सम्भव है। शिक्षा व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विकास का अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं शक्तिशाली साधन है। यही कारण है कि प्रत्येक समाज अपने नागरिकों के विकास के लिए शिक्षा प्रक्रिया का उपयोग करके अपने ज्ञान कौशल, अवबोध, अभिवृत्तियों, मूल्यों आदि का जीवन में उन्नत समावेश करना चाहता है। जिससे उसके नागरिक अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सके। इसके साथ ही शिक्षा समाज को विघटित करने वाले विभिन्न कारकों का खण्डन करके समाज को एकीकृत एवं संगठित करने का कार्य करती है।

मूल्य प्रत्येक व्यक्ति में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहते हैं तथा प्रत्येक व्यक्ति के अपने–अपने मूल्य होते है जैसे दया, धर्म, सेवा, स्नेह, अनुशासन, समानता, स्वतन्त्रता, ईमानदारी, वफादारी आदि। परन्तु आज के समय में व्यक्ति के मूल्यों में निरन्तर कमी आती जा रही है और वह एक वैज्ञानिक मशीन बनकर रह गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया है कि समाज में अनिवार्य मूल्यों में निरन्तर कमी के कारण पाठ्यक्रम में तथा शिक्षा व्यवस्था के समयानुसार परिवर्तन आवश्यक हो गया है ताकि शिक्षा द्वारा सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके।

सामाजिक मूल्यों से ही विभिन्न प्रकार की मनोवृत्तियों का निर्धारण होता है तथा व्यक्ति को उचित एवं अनुचित का ज्ञान होता है। पारसन्स एवं शिल्स के अनुसार सामाजिक मूल्य सामाजिक व्यवहार के कठोर नियन्त्रक हैं। उनके अनुसार सामाजिक मूल्यों के बिना सामाजिक जीवन असम्भव है, सामाजिक व्यवस्था सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकती तथा व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को अपनी आवश्यकताओं एवं जरूरतों को भावात्मक रूप से नहीं बता पाएँगे। संक्षेप में सामाजिक मूल्यों का महत्त्व है–

सामाजिक मूल्य मानसिक धारणाएँ हैं। अत जिस प्रकार समाज अमूर्त है उसी प्रकार मूल्य भी अमूर्त होते हैं। अन्य शब्दों में, सामाजिक मूल्यों को न तो देखा जा सकता है और न ही इनको स्पर्श किया जा सकता है, इनका केवल अनुभव किया जा सकता

है।
सामाजिक मूल्य व्यक्ति के लक्ष्यों, साधनों व तरीकों के चयन के पैमाने हैं। हम सामाजिक मूल्यों के आधार पर ही किसी एक लक्ष्य को अन्य की अपेक्षा अधिक प्राथमिकता देते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

किसी भी विषय के विकास में शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्त्ता को प्रारम्भिक अवस्था के सैद्धान्तिक एवं संशोधित साहित्य का अध्ययन करना होता है। बिना सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किये मौलिक अनुसंधान सम्बन्धी ज्ञान में कोई वृद्धि नहीं होगी। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एवं सर्वेक्षण अनुसंधानकर्त्ता को नवीनतम ज्ञान की प्राप्ति कराता है ।
एजिऑनी (1977) ने एक लेख प्रकाशित किया जिसमें यह निष्कर्ष निकाला गया कि मूल्यों के विशुद्धीकरण अथवा नैतिक शिक्षा तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक विद्यालयों की सामाजिक एवं व्यवसायिक आचार नीति स्वयं स्वीकृत मानदण्डों पर दृढ़ नहीं हो जाती।
भार्गव, आई० (1986) ने बच्चों के नैतिक विकास की आंशिक एवं औपचारिक संक्रियाओं और उनसे सम्बन्धित गृह एवं शैक्षिक पर्यावरण सम्बन्धी चरो के तुलनात्मक अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये।
गुप्ता, (1989) ने किशोरों के नैतिक एवं व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लैंगिक एवं क्षेत्रीय विभिन्नता के प्रभाव का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरों के व्यक्तिक मूल्यों पर क्षेत्रीय विभिन्नता का आवश्यक रूप से प्रभाव पड़ता है। उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी भाग में रहने वाले किशोरों के व्यक्तिक मूल्य प्रदेश के पश्चिमी भाग में रहने वाले किशोरों की अपेक्षा उच्च थे। लैंगिक विभिन्नता को किशोरों के नैतिक विकास में शामिल एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में पाया गया।
बाजपेयी, (1991) ने नैतिक नियमों एवं मूल्यों के विकास में शिक्षा पाठ्यक्रम के हस्तक्षेप एवं उनके सहज प्रभाव का प्रयोगात्मक अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि बच्चों में नैतिक नियमों के विकास में मध्यवर्ती कार्यक्रमों द्वारा वृद्धि होती है, उन्होंने निष्कर्ष प्राप्त किया कि जो बच्चे इन कार्यक्रमों में सहभागिता करते हैं उनमें सही एवं गलत का निर्णय लेने की योग्यता अर्जित हो जाती है।
धुल एवं खत्री, (2002) ने बच्चों के नैतिक तर्क–वितर्क के आधार पर मूल्यों के स्पष्टीकरण के प्रभाव का अध्ययन उनके माता–पिता के अभिवृत्ति के सम्बन्ध में किया। अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार थे।

- मूल्य स्पष्टीकरण तकनीक का बच्चों के नैतिक तर्क–वितर्क विकास पर सार्थक धनात्मक प्रभाव पड़ता है।
- मूल्यों के स्पष्टीकरण के परिणामस्वरूप, बच्चों के नैतिक तर्क–वितर्क विकास पर उनके माता–पिता के व्यवहार का सकारात्मक एवं सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कालिया एवं शियोरन, (2004) ने अनुसूचित जाति एवं अन्य जाति के युवा पुरूषों के मूल्यों एवं अनुसूचित जाति एवं अन्य जाति की युवा महिलाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षानुसार यह पाया गया कि अनुसूचित जाति के युवा पुरूष अनुसूचित जाति की युवा महिलाओं की अपेक्षा अधिक सैद्धान्तिक एवं धार्मिक हैं। अन्य मूल्यों में दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
अग्रवाल एवं अग्रवाल, (2006) ने गुजरात की हिंसा एवं हत्याकांड की घटना, पर्यावरण प्रदूषण, महिलाओं के विरूद्ध हिंसा, बाल श्रम आदि ने मूल्यों की भूमिका की व्याख्या की। शिक्षा का लक्ष्य बच्चों में ज्ञान के अतिरिक्त भौतिक, मानसिक, नैतिक एवं धार्मिक विकास का एकीकरण होना चाहिए। भाषा एवं साहित्य का सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों के विकास में अहम एवं सार्थक स्थान है।
बग्गा, निर्मल (2011) ने पाठ्य वस्तु शिक्षण के साथ मूल्यों के एकीकरण पर लेख प्रस्तुत किया। सामाजिक एवं राजनैतिक हस्तक्षेप के कारण नैतिक और धार्मिक शिक्षा का विद्यालय पाठ्यक्रम में कोई स्थान नहीं रह गया है। जो विचार, प्रत्यय एवं मूल्य छोटी उम्र में सीखे जाते हैं वे अर्द्धचेतन की गहराई में पहुँचकर स्मृति में रहते हैं। ये बच्चे बड़े होकर एक जिम्मेदार व्यस्क बनते हैं जो समाज में बदलाव ला सकते हैं। कुछ उच्च कक्षाओं के प्रारम्भिक स्तर पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों का एकीकरण सुन्दरतापूर्वक किया जा सकता है।
खान, अक्सा, (2012) ने किशोरों के स्वास्थ्य मूल्य पर उनके माता–पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय के प्रभाव का अध्ययन किया। दत्त संकलन के लिए डॉ० जी० पी० शैरी एवं प्रो० आर०पी० वर्मा द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि पिता की शिक्षा और व्यवसाय का प्रभाव उनके लड़के एवं लड़कियों के स्वास्थ्य मूल्य पर पड़ता है। इसी क्रम में माता की शिक्षा एवं व्यवसाय भी उनके लड़को एवं लड़कियों के स्वास्थ्य मूल्य को प्रभावित करता है।
गुप्ता, निधि (2013) ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्यों की प्रासंगिकता का अध्ययन किया क्योंकि मूल्यों की अवनति हमारे राष्ट्र के विकास की प्रमुख समस्या हैं अध्ययन में पाया गया कि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक मूल्य शिक्षा के वर्तमान परिप्रेक्ष्य जैसे शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा पद्धति, शिक्षक–शिष्य सम्बन्ध, अनुशासन की विधि, शिक्षण एवं पाठ्यक्रम की विधि आदि में अत्यन्त लाभकारी है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में शोधकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं –

- मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' का अध्ययन करना।
- मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों की तुलना करना।
- मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' के विभिन्न आयामों का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत अनुसंधान में शोधकर्त्ता ने सभी तथ्यों एवं उद्देश्यों पर विचार करने के पश्चात् निम्नांकित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया है –

- मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' में अन्तर सार्थक नहीं है।
- मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' के 'झूठ बोलने' सम्बन्धी आयाम में अन्तर सार्थक नहीं है।
- मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' के 'बेईमानी' सम्बन्धी आयाम में अन्तर सार्थक नहीं है।

अनुसंधान विधि

इसलिए इस शोध कार्य में शोधकर्त्ता ने विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों की प्राप्ति हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

आँकड़ो का प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या

शिक्षा स्तर के आधार पर नैतिक मूल्यों की गणना

परिकल्पना संख्याः 1

"मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' में अन्तर सार्थक नहीं है।"

तालिका 1: प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' की तुलना के लिए टी–परीक्षण से प्राप्त परिणाम –

समूह	संख्या	मध्यमान	मध्यमान अन्तर	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
प्राथमिक स्तर	196	26.54	1.53	5.35	3.288
उच्च प्राथमिक स्तर	204	28.07		3.79	

सार्थकता स्तर 0.05

व्याख्या

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का क्रान्तिक अनुपात 3.288 है जो स्वतन्त्रतांश 398 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर क्रान्तिक मूल्य 1.96 से अधिक है।अतः शिक्षा स्तर के आधार पर प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में 'नैतिक मूल्यों' में अन्तर पाया गया है।

अतः उपरोक्त परिकल्पना सं0–1. मेरठ जनपद के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में अन्तर सार्थक नहीं है" को अस्वीकृत किया जाता है।

शिक्षा स्तर के आधार पर नैतिक मूल्यों की गणना

परिकल्पना संख्याः 2

"मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के 'झूठ बोलने' सम्बन्धी आयाम में अन्तर सार्थक नहीं है।"

तालिका 2: प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'झूठ बोलने' सम्बन्धी आयाम में तुलना के लिए टी–परीक्षण से प्राप्त परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मध्यमानों का अन्तर	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
प्राथमिक स्तर	196	6.36	0.02	1.56	0.137
उच्च प्राथमिक स्तर	204	6.34		1.33	

सार्थकता स्तर 0.05

व्याख्या

प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'झूठ बोलने' सम्बन्धी आयाम का क्रान्तिक अनुपात 0.137 है जो स्वतन्त्रतांश 398 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर क्रान्तिक मूल्य 1.96 से कम है। उपरोक्तानुसार प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की 'झूठ बोलने' सम्बन्धी आयाम में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना संख्या 1.2 को स्वीकृत किया जाता है।

परिकल्पना संख्याः 3

"मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के 'बेईमानी' सम्बन्धी आयाम में अन्तर सार्थक नहीं है।"

तालिका 3: प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'बेईमानी' सम्बन्धी आयाम में तुलना के लिए टी–परीक्षण से प्राप्त परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मध्यमानों का अन्तर	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
प्राथमिक स्तर	196	6.83	0.22	1.65	1.502
उच्च प्राथमिक स्तर	204	7.05		1.24	

सार्थकता स्तर 0.05

व्याख्या

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'बेईमानी' सम्बन्धी आयाम का क्रान्तिक अनुपात 1.502 है जो स्वतन्त्रतांश 398 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर क्रान्तिक मूल्य 1.96 से कम है। अतः प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'बेईमानी' सम्बन्धी आयाम में सार्थक अन्तर नहीं है तथा शोध परिकल्पना संख्या 3 को स्वीकृत किया जाता है।

शिक्षा स्तर के आधार पर नैतिक मूल्यों की गणना

परिकल्पना संख्याः 4

"मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के 'चोरी करने' सम्बन्धी आयाम में अन्तर सार्थक नहीं है।"

तालिका 4: प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'चोरी करने' सम्बन्धी आयाम में तुलना के लिए टी–परीक्षण से प्राप्त परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मध्यमानों का अन्तर	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
प्राथमिक स्तर	196	7.15	0.84	1.73	5.562
उच्च प्राथमिक स्तर	204	7.99		1.24	

सार्थकता स्तर 0.05

व्याख्या

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'चोरी करने' सम्बन्धी आयाम का क्रान्तिक मूल्य 5.562 है जो स्वतन्त्रतांश 398 तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर क्रान्तिक मूल्य 1.96 से अधिक है। अतः प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'चोरी करने' सम्बन्धी आयाम में सार्थक अन्तर है तथा शोध परिकल्पना संख्या 1.4 को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष

मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' में अन्तर सार्थक पाया गया। अतः प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्य' 0.05 सार्थकता स्तर पर एक समान नहीं है। दोनों समूहों के मध्यमान के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में 'नैतिक मूल्यों' का विकास उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा कम हुआ है।

मेरठ जनपद के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' के 'झूठ बोलना' सम्बन्धी आयाम में 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं पाया गया। अतः प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'झूठ बोलना' सम्बन्धी

आयाम पर उनके शिक्षा स्तर का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और वह दोनों स्तरों के लिए समान है।

मेरठ जनपद प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' के 'बेईमानी' सम्बन्धी आयाम में 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर सार्थक पाया गया। अतः इस आयाम पर शिक्षा स्तर का प्रभाव पड़ता है। दोनों स्तर के विद्यार्थियों में इस आयाम की स्थिति एक समान नहीं है। दोनों समूहों के मध्यमानों से पता चलता है कि यह आयाम उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में अधिक विकसित है।

मेरठ जनपद प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' के 'चोरी करना' सम्बन्धी आयाम में 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर सार्थक पाया गया। अतः विद्यार्थियों का शिक्षा का स्तर सम्बन्धित आयाम को प्रभावित करता है। दोनों स्तर के विद्यार्थियों में यह आयाम समान रूप से विकसित नहीं है। दोनों समूहों के मध्यमानों से ज्ञात होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में सम्बन्धित आयाम अधिक विकसित है।

मेरठ जनपद प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के 'नैतिक मूल्यों' के 'धोखा देना' सम्बन्धी आयाम में 0.05 सार्थकता स्तर पर अन्तर सार्थक पाया गया। अतः सम्बन्धित आयाम भी शिक्षा के स्तर द्वारा प्रभावित होता है तथा दोनों स्तर के विद्यार्थियों में 'धोखा देना' सम्बन्धी आयाम की स्थिति एक समान नहीं है। दोनों स्तर के विद्यार्थियों के सम्बन्धित आयाम के मध्यमानों को देखकर ज्ञात होता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा यह आयाम अधिक विकसित है।

सन्दर्भ

1. कपिल, एल. के. "अनुसंधान विधियाँ", एच०पी० भार्गव बुक हाऊस, आगरा, पृष्ठ सं०. 2012;35:148–366.
2. चौधरी, रेनू. "मूल्य एवं नैतिक शिक्षण", श्री केविता प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ सं०, 2007, 3–7
3. तिवारी, चन्दा. "मापन मूल्यांकन एवं प्रश्न–पत्र संरचना", जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर, पृष्ठ सं०, 2007, 28–31.
4. पाण्डेय, के. पी. "अन्वेशिका" शिक्षक शिक्षा की भारतीय पत्रिका, वोल्यूम–07, पृष्ठ सं, 2010, 13
5. राजपाल, एच, सी. "आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य", पृष्ठ सं०, 2008, 78
6. राय, पी. एन. एवं राय सी. पी. "अनुसंधान परिचय", लक्ष्मी नारायण प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ सं०, 2012, 62.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.